मारेगा, तब तू इस सराप से छुटेगी. सो मैं उस सराप से छुटी. और अब मैं अपने पिता को नमस्कार करने जाऊंगी.

राजा बोला जो तू मेरे उपकार को माने, तो एक बारी मेरे राज को चलके देख; पीछे अपने पिता के दर्शन को जाइयो. वह बोली कि अच्छा; जो आपने कहा सो मुझे क़बूल. फिर राजा उसे साथ ले अपनी राजधानी में आया. शादियाने बजने लगे. सारी नगरी में ख़बर हुई कि राजा आया. तब घर घर बधाई मंगलाचार होने लगे. फिर तो तमाम नगर के मंगलामुखी आनके दरबार में मुबारक बादी देने लगे. राजा ने बहुतसा दान पुण्य किया.

फिर कई एक दिन पीछे, वह सुन्दरी बोली महाराज! अब मैं अपने बापके यहां जाऊंगी. राजा ने उदास हो कर कहा कि अच्छा सिधारो. जब इसने राजा को उदास देखा तो कहा महाराज! मैं न जाऊंगी. राजा ने कहा किसवास्ते तूने अपने बाप के यहां का जाना मौक़ूफ़ किया. वह बोली अब मैं मनुष की हो चुकी. और पिता मेरा गंधर्व है. अब मैं जाऊं तो मेरा आदर न करेगा. इस लिये मैं नहीं जाती. यह सुन राजा बहुत ख़ुश हुआ, और लाखों रुपये का दान पुन्य किया. राजा के इस अहवाल के सुन्ने से, दीवान की छाती फटी; और मर गया.

इतनी बात कह, बैताल बोला ऐ राजा! किस लिये वह मंत्री मर गया? तब राजा बीर बिक्रमाजीत ने कहा, मंत्री ने देखा कि राजा तो ऐश करने लगा. और राज-

काज की चिन्ता सब भुला दी. प्रजा अनाथ हुई. अब मेरा कहा कोई न मानेगा. इसी चिन्ता से वह मर गया. यह सुन, बैताल फिर उसी वृक्ष पर जा लटका. राजा, फिर उसी तरह से, कांधे पर रखकर उसको, रवाना हुआ.

बारहवीं कहानी.

बैताल बोला ऐ राजा बीर बिक्रमाजीत! चूड़ापुर, नाम एक नगर है. वहां का चूड़ामन(१) नाम राजा था. जिसके गुरूका नाम देवस्वामी. और उसके बेटे का नाम हरिस्वामी. वह कामदेवके समान सुंदर, और शास्त्र में बृहस्पति की बराबर. और धन उसके कुबेर का सा. वह एक ब्राह्मण की बेटी, कि नाम उसका लावन्यवती(२) था, ब्याह लाया. उन दोनों में बहुतसी प्रीति हुई.

गरज़, एक दिन, गरमी के मौसिम में, रात के वक़, चौबारे की छत पर, दोनों ग़ाफ़िल पड़े सोते थे. इत्तिफ़ाक़न, स्त्री के मुंह पर से ओढनी सरक गई. और गंधर्व बिमान पर बैठा हवा में उड़ा हुआ कहीं जाता था. अचानक, उसकी नज़र इस पर पड़ी कि वह बिमान को नीचे लाया; और उस सोती को बिमान पर रखकर ले उड़ा.

(१) चूड़ामणि. (२) लावण्यवती.

कितनी देर के पीछे, ब्राह्मण भी सोते से उठा, तो देखता क्या है कि स्त्री नहीं. तब घबराया; और वहां से उतरकर, तमाम घर में ढूंढा. जब इसे वहां भी वह न मिली, तो सारी नगरी की गली गली, कूचः कूचः, ढूंढता फिरा. लेकिन कहीं उसे न पाया. फिर अपने जी में कहने लगा कौन उसे ले गया; और कहां गई!

ग़रज़, जब कुछ बस न चल सका, तो आख़िर लाचार हो, अफ़सोस करता ऊआ, घर को आया; और वहां उसे फिर दुबारा भी ढूंढा, और न पाया. जब उस बिन घर सूना नज़र आया, तब निहायत बेचैनी और बेकली से बेइख़तियार हो, हाय प्रान प्यारी, हाय प्रान प्यारी करके, पूकारने लगा. फिर उसके बियोग से अति व्याकुल हो, अहस्ती छोड़, बैराग ले, लंगोटी बांध, भभूत मल, माला पहन, नगर तज, तीर्थ याचा को निकला. नगर नगर, गांव गांव, तीरथ करता ऊआ, एक नगर में दोपहर के समैं जा पहूंचा.

जब भूख से निपट लाचार ऊआ, तो ढाक के पत्तों का दौना बना, हाथ में ले एक ब्राह्मण के घर जा, उससे कहा कि मुझे भोजन भिक्षा दो. ग़रज़, जब प्रीति के बस आदमी होता है, तब उसे धर्म, ज़ात और खाने पीने का कुछ बिचार नहीं रहता; और निरादर हो, जहां पाता है तहां खाता है. जब उस ब्राह्मण से इन्ने भीख मांगी, तब उस ने इससे दौना ले, घर में जा, खीर से भर ला दिया. यह उस दौने को लिये तालाब कनारे आया. वहां

एक बड़ का दरख़त था, उस की जड़ पर दौना रख, सरोवर में मुंह हाथ धोने गया.

उस वृक्ष की जड़ से एक काला नाग निकल उस दौने में मुंह डाल चला गया; और वह दौना तमाम ज़हर से भर गया; कि इस में यह भी हाथ मुंह धोकर आया. पर उसे यह अहवाल मअ्लूम न था. और भूख भी निहायत लगी थी. आतेही खीर खाई. और वोंहीं उसे बिष चढ़ा. फिर इन्ने उस ब्राह्मण से जाकर कहा कि तैंने मेरे तईं बिष दिया. और मैं अब इससे मरूंगा. इतना कह, घूम कर गिरा; और मर गया. फिर उस ब्राह्मण ने इसे मुआ देख, अपनी खकीया स्त्री को घर से निकाल दिया; और कहा ब्रह्महत्यारी! तू यहां से जा.

इतनी बात सुना, बैताल बोला कि ऐ राजा! इनमें से ब्रह्महत्या का पाप किसे ऊआ? राजा ने कहा सांप के मुंह में तो बिष होताही है. इससे उसे पाप नहीं. और ब्राह्मण ने भूखा जान के भिक्षा दी थी. उसे भी पाप नहीं. और उस ब्राह्मणी ने स्वामी की आज्ञा से भीख दी थी. उसे भी पाप नहीं. और उसने भी अनजाने खीर खाई. तिससे उसे भी पाप नहीं. ग़रज़, इनमें से जिस को कोई पाप लगावे वही पापी है. यह सुन, बैताल फिर उसी तरवर पर जा लटका. और राजा भी जा उसे उतार, बांध कांधे पर रख, वहां से ले चला.

———